International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 3; Issue 11; November 2016; Page No. 190-192

"मनुष्य के रूप" की सोमा

डॉ0 उत्तम पटेल

एसोसियेट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष, श्री वनराज आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज, धरमपुर, जिला. वलसाड, गुजरात, भारत

सारांश

"मनुष्य के रूप" समाजवादी विचारघारा पर आधारित एक घटना प्रधान उपन्यास है । इस उपन्यास में लेखक में धनसिंह, सोमा, भूषण, मनोरमा, बैरिस्टर जगदीश, बरकत, सुतलीवाला, पुलिस, सोमा के ससुरालवाले आदि चेहरे उभरते हैं। सोमा इस उपन्यास की नायिका है तो धनसिंह को नायक कह सकते हैं। सोमा गतिशील पात्र है तो धनसिंह आदि स्थिर। इनके अतिरिक्त भूषण और मनोरमा भी महत्वपूर्ण पात्र हैं, जिनके बिना सोमा की कहानी अधूरी ही रहेगी। लेखक ने समाज के अलग-अलग वर्ग के पात्र लिए हैं जो मनुष्य के अलग-अलग रूप हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं। वैसे भगवतशरण मिश्र का मत है कि "यद्यपि इस उपन्यास में कोई प्रभावशाली पात्र नहीं है, अधिकांश कामुकता के ही आखेट हैं।" [1] इन पात्रों के चरित्र-चित्रण के लिए लेखक ने प्रत्यक्ष एवम् परोक्ष-दोनों प्रणालियों का उपयोग किया है। वैसे लेखक ने संवादों के द्वारा ही अधिकतर पात्रों की विशेषताएँ प्रकट की हैं।

मूल शब्द: यशपाल, सोमा, धनसिंह, समाजवादी, शोषण।

परिचय

सोमा 'मनुष्य के रूप' उपन्यास की नायिका है। वह पहाडी प्रदेश में रहनेवाली एक विधवा राजपूतानी है। उसकी उम्र बहुत कम है। शरीर की उठान और चेहरे के कच्चेपन से वह क्वाँरी लड़की ही जान पड़ती है। वह एक अनपढ़ नादान औरत है। उसकी माँ बचपन ही में मर गई थी। उसके बाप ने कर्जे से खेत छुडाने के लिए पैसे लेकर उसकी शादी करवा दी थी। विवाह के नवें महीने ही उसके पति की गोली लगने से मृत्यु हो जाती है। उसकी एक लड़की भी थी, जो मर गई थी। बड़ी-छोटी जेठानियाँ उसे पहले भी नहीं झेलती थीं। विधवा होने के बाद तो वह ससुराल में बोझ बन जाती है। उसे अपनी सास आदि की मार सहनी पड़ती है। वह ठीक ही तो कहती है- हड्डियाँ काम में भी टूटती हैं और मार से भी। [2] सोमा बहुत ही सीधी दुःखी औरत है। उसमें कपट नहीं है। फिर भी वह अपनी ससुराल में सास-ससुर, देवरानी-जेठानी के अत्याचारों का भोग बनती है। ससुराल में सोमा की दशा बहुत ही दयाजनक, करुणाभरी है। ससुराल में उसे गालियों की कोई नवीनता नहीं है। जेठानी के ताने उसे सुनने पड़ते हैं। उसके बाप ने तो उसे बेच दिया था। अब उसका ससुर भी उसे बेचना चाहता है। उसका जीवन संवेदना से भरा है। दुःख के परिणाम स्वरूप तो वह घर में छिप-छिपकर रो लेती है। स्वयं को बेचने की बात सुनकर तो उसका कलेजा धक्-धक् करने लगता है। काँच के बड़े-बड़े मनकों जैसे आँसू वह बहाती रहती है। दो साल से उसके साथ किसी ने भी सहानुभूति से बात नहीं की थी। ससुरालवालों के डर से कि मेमना मर जायेगा तो उसका क्या होगा- तो वह मोटर से टक्कर लगने पर भी रास्ते से नहीं हटती। पिटाई के डर से तो वह अपनी जान को जोखिम में डालती है।

वह एक बहुत भावुक औरत है। मोटर दुर्घटना से उसका धनसिंह से परिचय होता है। धनसिंह की सहानुभूति, सांत्वना सोमा को उसकी ओर आकर्षित करती है। ससुराल की कटुता और निर्दयता उसे शरण के लिए धनसिंह की छाया में धकेल देती है। उसका जीवन तो औंधे घड़े के समान है। धनसिंह की संवेदना से तो उसके लिए भाग्य के अतिरिक्त किसी और के प्रति उलाहना नहीं देती। उसका धनसिंह से यह कहना कि "तुम बहुत भले लोग हो जी! दो बरस में कोई भी मुझसे ऐसे नहीं बोला" [3] 23 - उसके दुःख, उसकी उदारता का व्यंजक है।

अपने जीवन में उसे सहानुभूति, स्नेह आदि नहीं मिले हैं। इसलिए तो नित्य मार और लाँछन के आतप से बिलबिलाती रहनेवाली सोमा धनसिंह के आगे-आगे चलती हुई सहानुभूति और सांत्वना का आश्रय अनुभव करती है।

सोमा बहुत उदार है। वह एक नारी है और नारी किसी को भूखा नहीं देख सकती। सोमा भी धनसिंह को भूखा नहीं रख सकती। द्वार आये परदेसी-पाहुने को कोई भूखा नहीं रखता। वह धनसिंह के लिए रोटी लेकर जाती है। धनसिंह की वह आभारी है क्योंकि उसने तो उसकी जान बचायी है। वह धनसिंह को चाहने लगती है। और उसकी बाट जोहती है। बाबूलाल, धनसिंह के सामने सोमा की दशा का वर्णन करते ठीक ही कहता है- "मालूम होता है, वह लडकी या तो किसी मुसीबत में है या पागल हो गयी है। हमेशा सड़क-किनारे दिखायी देती है। मोटरों में झाँकती रहती है। कुछ रोई-रोई-सी, खोई-कोई-सी जान पडती है।" [4] इसमें सोमा की धनसिंह से मिलने की आतुरता एवम् ससुराल का दुःख प्रकट होते हैं। वह धनसिंह की राह देखती रहती है और एक दिन उसके साथ भागती है। क्योंकि उसका ससुर उसे मंडी में बेचने के लिए ले जाना चाहता था। धनसिंह सोमा का आधार बन जाता है। "सोमा और धनसिंह के जीवन में घटित घटनाएँ तथा परिस्थितियाँ उन्हें कई रूप प्रदान करती हैं। ये परिस्थितियाँ उन्हें कभी बनने देती हैं और कभी बिगड़ने देती हैं। उनके जीवन-चक्र के इस बदलाव का कारण आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थितियाँ बतायी गई हैं।" [5]

धनसिंह के साथ भागने पर वे पुलिस के हाथों पड़ते हैं। धनसिंह को छः महीने की सज़ा होती है। तब सोमा की दशा दयनीय हो जाती है। वह धनसिंह के साथ जेल जाना चाहती है क्योंकि वह अनपढ़ तथा नादान लड़की है। उसे कानून का भी ज्ञान नहीं है कि बिना अपराध कोई जेल नहीं जा सकता। अदालत सोमा को चौधरी निर्भयराम को दे देती है। उसे धनसिंह के प्रति इतना प्यार है कि दो महीने तक चौधरी का उपदेश पाकर भी वह धनसिंह को छोड़कर विधवा-विवाह करके भली औरत बनने के लिए तैयार नहीं होती। बाद में वह भूषण की सहायता पाकर लाला ज्वालाप्रसाद सहाय के यहाँ पहुँचती है।

सोमा एक मेहनतु औरत है। ससुराल में वह बहुत काम करती थी। फिर भी खाने के लिए पेट भरकर नहीं दिया जाता था। लाला ज्वालाप्रसाद के यहाँ आकर वह कुछ-न-कुछ करती रहती है। वह नौकरों के काम में भी हाथ बँटाती रहती है। क्योंकि उसे बचपन से ही कठिन श्रम तथा काम करते रहने का अभ्यास था। जिसके कारण ही तो

वह मनोरमा की माँ की करुणा और विश्वास पा लेती है। अमीर लोगों को वह देवता मानती है।

सोमा एक अशिक्षित लड़की है। उसकी सद्भावना और बुद्धि तथा सुघड़ता का बखान मनोरमा भी करती है। लाला ज्वालाप्रसाद के परिवार में आकर वह कुछ नये अनुभवों से गुजरती है। अपने श्रम तथा सच्चाई से वह सभी को जीत लेती है और धीरे-धीरे उसमें मद भर जाता है। वह अभिमानी होती जाती है। नौकर जागू, मोहना तथा नौकरानी जीवा की वह उपेक्षा करती है। वह बिलकुल बदल जाती है। उसमें कुछ शहरीपन आ जाता है। चेहरा पहले से अधिक साफ और आँखें और गहरी हो जाती हैं। लाला ज्वालाप्रसाद भी सोमा को बुरी नहीं मानते, वे तो उसे बदकिस्मत समझते हैं।

सोमा एक सहनशील-सहिष्णु नारी है। ससुराल में उसका यह गुण विकसित हुआ है। जेल से छूटने के बाद धनसिंह सोमा से बहुत कम बोलता है, फिर भी सोमा धनसिंह के इस व्यवहार की कोई शिकायत नहीं करती। वह धनसिंह के मन को समझती है। धनसिंह का दुःख उससे देखा नहीं जाता। जब वह उदास-उदास रहता है तब उसे दुःख होता है। सोमा को मनोरमा का लाहौर जाना बहुत खलता है। सोमा को खाली बैठने की आदत नहीं है। वह चरखे पर माँ जी के लिए सूत या ऊन कातती रहती है या अपनी रसोई की तैयारी में लगी रहती है। उसका जीवन धीर-धीरे चलनेवाले काठी के कोल्हू जैसा हो जाता है।

बैरिस्टर जगदीश के शब्दों में कहें तो सोमा शरीफ़ औरत है। वह एक दुःखी नारी है। धनसिंह जब हत्या करके भाग जाता है तब वह उदास हो जाती है। अपने दुःखों को भुलाने तथा सहाय परिवार की दया का अधिकार पाने के लिए वह प्रतिक्षण किसी न किसी काम में लगी रहती है। जगदीश की पत्नी सोमा के इस गुण की प्रशंसा करती है। उसके लिए तो सोमा मानो भगवान की कृपा थी।

सोमा को अपने पहाड़ी-प्रदेश के लिए अप्रतीम प्रेम है। जब जगदीश उसे लाहौर ले जाता है तब अपना देश छोड़ते समय, ज्यों-ज्यों मोटर पहाड़ से नीचे उतरती जाती है, सोमा आँखें बचाकर खूब रोती है। उसका मातृ-भूमि प्रेम आँसू बनकर बह जाता है।

सोमा मनोरमा आदि की कृतज्ञ है। उनके लिए तो वह प्राण देना चाहती है। जगदीश-मनोरमा उसे प्यार और आदर देते हैं। उसका बदला सोमा अपने कर्तव्य को निभाकर चुकाती है। वह सुंदर है, उसका उसे अभिमान है। जगदीश के घर को सोमा बहुत दिनों से सँभाल रही होती है। परंतु धीरे-धीरे उसके व्यवहार से नौकर का दैन्य मिटता जाता है। पहले काम करनेवाली सोमा काम कराने लगती है। नौकरों को हुक्म देती है। सोमा घर का काम ममता और अधिकार से करती है। उस परिवार में आने के बाद सोमा के रूप, रंग, व्यवहार और स्थिति में बदलाव आ जाता है। घर का सारा कारोबार वह सँभाल लेती है।

सोमा में नारी सुलभ लज्जा, क्षोभ तथा दुर्बलता है। जगदीश के मुख से अपने सौंदर्य की प्रशंसा सुनकर उसे नशा-सा हो जाता है। इस नशे से उसके स्वर और व्यवहार में अधिकार की ध्वनि सुनाई देती है। नौकर उसे जगदीश की रखैल मानते हैं। अंत में वह अपने आपको जगदीश को समर्पित कर देती है। सोमा में आये बदलाव को देखकर भूषण मनोरमा से उपयुक्त ही कहता है- "याद है, एक दिन इस स्त्री का जीवन उस आदमी के बिना संभव नहीं था। अब यह दूसरी दुनिया में है।" [6] उसमें आये बदलाव के कारण ही तो साड़ी के बहाने उस घर की स्त्रियाँ उसे घर बाहर कर देती हैं। वह ईमानदार औरत है। इसलिए तो घर से निकाल दिये जाने के बावजूद उन लोगों से पैसे वह नहीं लेती।

सोमा बैरिस्टर के ड्राईवर बरकत के साथ भागकर बम्बई आती है। बरकत फिल्म का हीरो बनने का दिवास्वप्न देखा करता था अतः वह सोमा को भी वह उसी व्यवसाय में लगाने की सोचता है। बरकत का संग सोमा के लिए एक बडा ही बीभत्स अनुभव का द्वार खोलता है। फिल्म व्यवसाय के अनेक बुरे अनुभव लेने के पश्चात् बनवारी की सहायता से सोमा मिस पहाड़न के रूप में एक सफल अभिनेत्री बन जाती है।

धनसिंह को कानपुर में यह मालूम होने पर कि 'जलता घोंसला' फिल्म की हीरोइन पहाड़िन सोमा ही है, तब वह बेचैन हो उठता है। यही बेचैनी उसे बम्बई ले जाती है। बम्बई में संयोगवश उसकी मुलाकात मनोरमा से होती है। कामरेड भूषण के साथ सोमा से मिलने वह उसके बंगले पर जाता है। वहाँ अमीन और बरकत के पहाड़िन से मिलने के लिए मना करने पर हाथापाई होती है। बरकत अपने साथी को मार खाते देखकर धनसिंह पर हथियार से वार करता है किन्तु बीच में भूषण आ जाता है। वह सख्त घायल हो अस्पताल में मर जाता है। बरकत हत्या के भय से भाग जाता है। धनसिंह भूषण के सम्मान पर आँच न आने देने के प्रयत्न में अपनी सारी कहानी कहकर फिर जेल चला जाता है। धनसिंह को पहाड़िन, सोमा के रूप में परिचय देने से इन्कार करती है। उस पर मरनेवाली सोमा धनसिंह को जेल जाते निरपेक्ष भाव से देखकर अपने बंगले के भीतर चली जाती है।

डॉ.शिवकुमार मिश्र का यह मत कि "यशपाल ने यों तो हर प्रकार के मानवीय शोषण की जबर्दस्त खिलाफ़त की है किन्तु औरत के शोषण को लेकर शायद उन्होंने सबसे अधिक लिखा है। शोषितों का कतार में औरत उनकी संवेदना शायद इसीलिए सबसे ज्यादा पा सकी है कि दूसरों की तुलना में औरत होने के नाते वह उस हविस की शिकार, उस भोग की वस्तु भी बनती रही है, जिसका सीधा संबंध पुरूष की काम-वृत्ति से है। औरत के शोषण का रूप उजागर करते हुए य़शपाल ने औरत संबंधी सामंती पूँजीवादी मानसिकता पर जबर्दस्त प्रहार किया है।" [7]- सोमा पर भी सही प्रतीत होता है।

सरोज गुप्त का यह कथन कि "नारी के विविध रूपों के संसर्ग में यदि देखा जाए तो यशपाल जी का 'मनुष्य के रूप' का विशेष महत्व है। सोमा इस उपन्यास की प्रमुख पात्रा युवावस्था में ही विधवा हो जाती है। एक शोषित विधवा के जीवन की शोचनीय दशा को जिस तरह यशपाल जी ने चित्रित किया है। वह विधवा के जीवन की शोचनीय दशा को प्रस्तुत करता है। लड़की तो पराए घर की अमानत है पर भाई, विधवा बहू तो ज़िंदगी भर का जंजाल है परन्तु सोमा पर इन बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता वह परिश्रमी बनकर एक प्रगतिवादी नारी के रूप में नज़र आती है।" [8]

जबकि चंद्रकांत बान्दिवडेकर का मानना है कि "'मनुष्य क रूप' दिखाने के लिए उठाया गया यह नारी-पात्र स्वयं इतना व्यक्तित्वविहीन है कि पाठक उसके भिन्न रूपों से ज़रा भी चमत्कृत नहीं होता। सोमा को लेखक ने अनपढ़, गंवार के रूप में उठाया है परंतु क्या गंवारों में विचार की ज़रा भी शक्ति नहीं होती ...श्रेणी-संघर्ष के प्रति जागरूक इस लेखक ने जगदीश बाबू, मनोरमा और भूषण की तत्त्व-चर्चा में सोमा के मन की कसमसाहट को भुला दिया है।" [9]

निष्कर्ष- 'मनुष्य के रूप' एक यथार्थवादी उपन्यास है। यह उपन्यास यशपाल के इस विश्वास को सिद्ध करता है कि परिस्थितियों से विवश होकर मनुष्य के रूप परिवर्तित हो जाते हैं। इसमें लेखक ने यह चित्रित किया है परिस्थितियों के घात-प्रतिघात से इस उपन्यास की नायिका सोमा कैसे बदल जाती है। यही कारण है कि "'मनुष्य के रूप' उपन्यास में यशपाल जी की नायिका सोमा है, जो जीवन के विभिन्न घटनाक्रमों को पार करती हुई सिने की प्रख्यात नायिका बनकर संघर्षों को सफलता में परिवर्तित करती है।" इस प्रकार यशपाल की सोमा व्यक्तित्वहीन नारी नहीं है। यशपाल ने 'मनुष्य के रूप' उपन्यास में समाजवादी विचारधारा को केन्द्र में रखकर रोमांस का चित्रण किया है जिसके परिणाम स्वरूप उपन्यासकार अपनी विचारधारा से भटके प्रतीत होते हैं किन्तु ऐसा नहीं है। उपन्यासकार का मुख्य उद्देश्य तो सोमा के चरित्र के माध्यम से मनुष्य के बदलते हुए रूपों को चित्रित करना रहा है। और उसमें यशपाल सफल रहे हैं।

संदर्भ-संकेत

1. मिश्र, भगवतशरण, हिंदी के चर्चित उपन्यासकार, 2010, राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली, पृ.112
2. यशपाल, मनुष्य के रूप,1994, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ.19
3. वही.पृ.23
4. वही. पृ.56
5. योहन्नना, सी.एम., यशपाल का कहानी संसारः एक अंतरंग परिचय, 2005, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,पृ.90
6. यशपाल, मनुष्य के रूप,1994, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ.187

7. मिश्र, शिवकुमार, दर्शन, साहित्य और समाज, 1981, पीपुल्स लिटरेसी, दिल्ली, पृ.164
8. सक्सेना, प्रदीप, यशपालः व्यक्तित्व और कृतित्व,1979, अनुराग प्रकाशन, अजमेर संस्करण,पृ.59